B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A) /Unit – 3(b)
Topic – व्याख्यान विधि (Lecture Method)
Lecture No. - 67

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Continued from the previous lecture...

व्याख्यान विधि के गुण
(Merits of Lecture Method)

व्याख्यान वधि के निम्नलिखित गुण हैं -

1. यह अध्यापन की सबसे सरल, सुलभ एवं सुगम विधि है।
2. बड़े समूह के शिक्षण के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विधि है।
3. समय एवं धन की बचत होती है।
4. इसे कक्षा के बाहर भी प्रयुक्त किया जा सकता है।
5. अध्यापक व्याख्यान की तैयारी पूर्व में ही करता है , इसलिए सुनियोजित, सुव्यवस्थित शिक्षण संभव है।
6. पूर्व तैयारी करने में अनेक स्रोतों एवं लंबे समय से सूचनाएं एकत्रित की जाती है। इससे छात्रों को उच्च कोटि की नवीनतम सामग्री प्राप्त हो जाती है।
7. इससे छात्रों में तर्क-शक्ति, विश्लेषण एवं विवेचन-शक्ति का विकास होता है।
8. उच्च मानसिक स्तर के छात्रों एवं उच्च कक्षाओं के लिए उपयोगी है।
9. कम समय में अधिक विषय-वस्तु को प्रस्तुत किया जा सकता है।
10. विद्यार्थियों में सुनने की आदत का विकास करती है।
11. प्रकरण के जटिल बिन्दुओं को सरलता से स्पष्ट किया जा सकता है।
12. उत्तम व्याख्यान छात्रों को विषय के प्रति आकृष्ट करने में सहायक होता है।

व्याख्यान विधि के दोष
(Demerits of Lecture Method)

इस विधि के प्रमुख दोष निम्नांकित हैं -

1. यह विधि छात्रों को निष्क्रिय श्रोता बना देती है।
2. यह विधि सैद्धांतिक पर अधिक बल देती है।
3. इस विधि में सीखने के सिद्धांत के लिए कोई जगह नहीं है।
4. विद्यार्थियों को मौलिक चिंतन का अवसर नहीं मिलता है।
5. छोटी कक्षाओं एवं निम्न स्तर के छात्रों के लिए उपयुक्त नहीं है।
6. इस विधि द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान स्थायी नहीं होता है।
7. विद्यार्थियों में स्वाध्याय की आदत का निर्माण करने में यह विधि असफल रही है।
8. शिक्षक के द्वारा उचित तैयारी की अनुपस्थिति में यह विधि उबाऊ सिद्ध होती है, इसलिए कक्षा में अनुशासनहीनता के उत्पन्न होने की आशंका बनी रहती है।
9. विद्यार्थियों से सतत प्रतिपुष्टि नहीं मिल पाती है।
10. यह विधि स्मृति पर अधिक बल देती है।

(**समाप्त**)